महिला शिक्षा का विकास एवं राष्ट्र निर्माण मे उनका योगदान

डॉ.ज्योत्सना वर्मा

जय प्रकाश विश्वविद्यालय,छपरा

किसी भी राष्ट्र का तब तक पूर्ण विकास नहीं हो सकता है जब तक की उसकी आधी आबादी का उसके विकास में पूर्ण योगदान नहीं हो। दूसरी तरफ किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसके विकास का चरम बिन्दु होता है। यदि हम राष्ट्र का पूर्ण निर्माण उसके विकास के चरम बिन्दु पर गौर करें तो हम स्पष्ट रूप से पाते हैं कि किसी भी राष्ट्र का चरम विकास तभी हो पाता है जब उस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था पूर्ण रूप से विकसित हो। अर्थात् उस राष्ट्र में समान रूप से शिक्षा का प्रसार हुआ हो। ऐसे में जब हम राष्ट्र का निर्माण के प्रश्न पर सोंचते है तो हमें यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होने लगता है कि जब तक देश की आधी अबादी पूर्ण रूप से शिक्षित नहीं होगी तब तक राष्ट्र निर्माण पूर्ण नहीं हो सकता। दूसरे दृष्टिकोण से हम देखे तो किसी भी राष्ट्र के निर्माण में उसके समाज के सभी वर्गो की पूर्ण भागीदारी होती है तथा वर्ग की पूर्ण भागीदारी तभी संभव है जब उस वर्ग में उसकी आधी आबादी का पूर्ण योगदान होता है।

यदि हम राष्ट्र निर्माण के अवयव पर गौर करें तो हम पाते हैं कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण कई तत्वों पर निर्भर होता है। जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, सामाजिक एकता, राजनैतिक जागरूकता पर्यावरण संरक्षण आदि प्रमुख कारक होते है। ये वे तत्व है जो वास्तविक तौर पर किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सबसे प्रमुख भूमिका निर्वहन करते है।राष्ट्र निर्माण के तत्वों पर शिक्षित महिला के प्रभाव या शिक्षित महिला की भूमिका पर गौर करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी कालखण्ड में तथा किसी भी परिस्थिति में एक राष्ट्र का निर्माण तभी संभव है जब महिला शिक्षित होकर निर्माण के समस्त अवयव में अपनी पूर्ण भागीदारी दें। क्यों कि एक राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई परिवार होती है तथा कई परिवार मिलकर एक समाज बनता है एंव कई समाज मिलकर राष्ट्र बनता है। ऐसे में एक राष्ट्र का वास्तविक निर्माण उसके परिवार पर निर्भर है। दूसरी तरफ परिवार का निर्माण या विकास स्त्री पर निर्भर है। यदि एक महिला शिक्षित होगी तो वह अपने परिवार का बेहतर विकास कर सकती है या परिवार का बेहतर निर्गाण कर सकती है। राष्ट्र के हर परिवार में शिक्षित महिला होने से राष्ट्र का निर्माण उत्तम तरीके से होगा।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सबसे बड़ा तत्व होता है। शिक्षा के हीं माध्यम से देश की समस्त समस्याओं को समाप्त किया जा सकता है तथा देश को प्रगति के पथ पर लाया जा सकता है।[1] अर्थात् शिक्षा देश के आर्थिक विकास, सामाजिक विकास एंव एकता राजनैतिक जागरूकता तथा संसाधन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए, तो शिक्षा मानव को समान्य मानव से मानव संसाधन के रूप में बदलता है। अब हम शिक्षा के विकास पर सोंचे तो हम पाते है कि शिक्षा का पूर्ण प्रसार तभी संभव है जब हमारे समाज की महिलाएं शिक्षित हो। यदि हम 1951 से 2011 तक के जनगणना में शिक्षा के विषय पर गौर करे तो यह स्पष्ट हो जाता है किस प्रकार राष्ट्र के निर्माण में शिक्षित महिलाओं ने अपना योगदान दिया है।

जनगणना वर्ष	कुल साक्षरता	पुरूष साक्षरता	महिला साक्षरता
1951	18.33	27.16	8.86
1961	28.30	40.40	15.35
1971	34.45	45.96	45.96
1981	43.57	56.38	29.76
1991	52.21	64.13	39.29
2001	64.84	75.26	53.67
2011	74.04	82.14	65.46

श्रोतः– https://www.hindilibraryindia.com

यदि हम जनसंख्या के उपर दिये आंकड़ो का विश्लेषण करें तो हमें स्पष्ट रूप से पता चलता है कि जिस दर से हमारे देश की महिला साक्षरता दर बढ़ रही है लगभग उसी दर से हमारे देश की कुल साक्षरता भी बढ़ रही है। जैसे 1951 से 1961के बीच देश की कुल साक्षरता 18.33 प्रतिशत से बढ़कर 28. 30 प्रतिशत हो गई, अर्थात् 10 वर्षो में कुल बृद्वि 9.97 प्रतिशत की ही रही दूसरी तरफ 1951 से 1961के बीच देश में महिलाओं की साक्षरता दर 1951 के 8.86 प्रतिशत की तुलना में 1961 में बढ़ कर 15.35 प्रतिशत हो गई अर्थात् महिला साक्षरता दर 10 वर्ष मे कुल बृद्वि 6.49 प्रतिशत रही। वहीं हम जनगणना वर्ष 1981 से 1991 के बीच तुलना करें तो 1981 की कुल साक्षरता दर 43.57 प्रतिशत से जनगणना वर्ष 1991 में बढ़कर 52.52 प्रतिशत हो गई अर्थात् 1981 से 1991 के बीच कुल बृद्विदर 8.95 प्रतिशत रही। जबकि इसी कालखण्ड में महिला साक्षरता दर जनगणना वर्ष 1981 के 29.76 प्रतिशत की तुलना में जनगणना वर्ष 1991 में बढ़कर 39.29 प्रतिशत हो गई। अर्थात् 1981 की तुलना में 1991 में महिला साक्षरता दर 9.95 प्रतिशत बढ़ी। यदि हम अंतिम रूप से जनगणना वर्ष 2001 तथा जनगणना वर्ष 2011 की तुलना करें तो हम पाते है कि 2001 में भारत की कुल साक्षरता दर 64.84 प्रतिशत थी जो कि 2011 में बढ़कर 74.04 प्रतिशत हो गई। अतः 2001 की तुलना में 2011 के जनगणना वर्ष में कुल साक्षरता दर में 9.20 प्रतिशत की बृद्वि हुई। इसी काल खण्ड में कुल महिला साक्षरता दर जनगणना वर्ष 2001 में 53.67 प्रतिशत थी जो कि जनगणना वर्ष 2011 में बढ़ कर 65.46 प्रतिशत हो गई। अर्थात् 2001 की तुलना में 2011 के जनगणना वर्ष में महिला साक्षरता दर में लगभग 11.79 प्रतिशत की बृद्वि हुई।

ऊपर तुलना किये गये 1951से 1961 के कालखण्ड, 1981 से 1991 के कालखण्ड, 2001से 2011 के कालखण्ड के जनगणना के आंकड़े पर गौर किया जाय तो हमें स्पष्ट रूप से पता चलता है कि जिस दर से महिला शिक्षा की बृद्वि हो रही है लगभग उसी दर से या उसी दर के आस पास भारत की साक्षरता दर बढ़ रही है। इसका सीधा अर्थ यह है कि भारत में जैसे– जैसे महिला शिक्षा का विकास हो रहा है वैसे–वैसे देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार हो रहा है। महिला से संबंधित समाजशास्त्री अध्ययन में स्पष्ट रूप से बताया जाता है कि किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था की गुणात्मक वृद्वि मुख्य रूप से उस देश के महिला शिक्षा के विकास पर निर्भर करती है।[2]

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण की बात करें तो हम देखते है कि 1966 से 1977 ई0 तथा 1980 से 1984 ई0 तक भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी रहीं जो कि स्वंय एक शिक्षित महिला थी। 1960 के दशक में भारत – चीन युद्व के बाद 1966 में भारत–पाकिस्तान युद्व के बाद भारत में आर्थिक, सामरिक,सामाजिक समस्या के अलावा भारत में क्षेत्रीय अलगाव भी एक समस्या के रूप मे समाने थी। एक तरफ देश में अराजकता बढ़ रही थी तो दूसरी तरफ देश में अलगाव एंव अराजकता का माहौल था। इसी

दौर में इंदिरा गांधी ने अपने ज्ञान कौशल का प्रयोग कर 1971 में न केवल पाकिस्तान को पराजित कर विश्व समुदाय में भारत की धाक जमायी अपितु भारत का क्षेत्रीय एकीकरण कर (पूर्वोत्तर राज्यों का) भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में भी उभारने का कार्य किया।

भारतीय शिक्षित महिलाओं में हंसा मेहता तथा दुर्गाबाई देशमुख का नाम भारतीय राष्ट्र निर्माण में सबसे ऊपरी पायदन पर रखा जा सकता है। हंसा मेहता का नाम भारत के उन पढ़ी लिखी महिलाओं मे लिया जा सकता है जिन्होनें शिक्षा का विकास कर विशेष रूप से स्त्री शिक्षा पर कार्य कर के राष्ट्र निर्माण में अपूर्व योगदान दिया इन्होने 1960– 1961 की हंसा मेहता समिति की अध्यक्ष के तौर पर कार्य किया। इस समिति ने 1962 में महिला शिक्षा पर व्यापक सुझाव दिये।[3] इसी समिति के कारण 1960 के दशक में भारत में महिला शिक्षा के विकास को गति मिली। इनसे पूर्व भारतीय शिक्षित महिला दुर्गाबाई देशमुख ने भी भारत में आंध्र महिला सभा विश्वविद्यालय महिला संघ, नारी निकेतन जैसे संस्थाओं की स्थापना की। दुर्गाबाई देशमुख ने हीं अपने अहम् योगदान द्वारा भारत में समाज सेवा का विश्व कोष तैयार करवाने में मदद की। दुर्गाबाई देशमुख का भारतीय महिला शिक्षा के विकास में सबसे बड़ा योगदान दुर्गाबाई देशमुख समिति के रूप में। यह समिति 1958 में बनी थी।[4] जिसे पहली राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति के रूप में भी जाना जाता है। इस समिति ने 1958 में अपनी रिपोर्ट की भूमिका में हीं स्पष्ट रूप से लिखा था कि ''राष्ट्र की प्रगति बगैर महिलाओं के मजबूत भागीदारी के संभव हीं नहीं है।[5]

इस प्रकार समझा जा सकता है कि भारत में शैक्षिक विकास तथा शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण महिला शिक्षा के बिना अधूरा हीं रहेगा। स्वतंत्रता के बाद से लेकर 2011 तक की जनगणना से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत में जिस दर से महिला साक्षरता बढ़ रही है उसी दर से देश की साक्षरता भी बढ़ रही है। यदि हम देश की साक्षरता बढ़ाने का समुचित प्रयास करते है तो हमें पहले महिला शिक्षा का विकास करना होगा। क्योंकि राष्ट्र निर्माण का सबसे बड़ा कारक शिक्षा हीं है। स्वतंत्र भारत में सरोजनी नायडू, सुचेता कृपलानी पंडित विजया लक्ष्मी जैसी महिलाओं ने भी राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की और विशेष रूप से शिक्षित महिलाओं की भूमिका पर व्यापक बल दिया था। इसके साथ–साथ गांधीवाद से भी प्रभावित अनेक शिक्षित महिला भी जिन्होनें आजादी के बाद भारत के विकास में अहम योगदान दिया।

राष्ट्र निर्माण में अर्थव्यवस्था का अहम् योगदान होता है। शिक्षा के बाद आर्थिक तंत्र की वह बड़ा कारक है जो देश के विकास के साथ–साथ देश के एकता तथा उसके सम्पूर्णता में व्यापक रूप से सहायक बनता है। जहाँ तक अर्थव्यवस्था के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की बात की जाय तो इसमें शिक्षित तथा अशिक्षित दोनो प्रकार की महिलाओं का व्यापक योगदान रहा है। पहले अशिक्षित महिलाओं की चर्चा की जाय तो भारतीय अर्थ व्यवस्था कृषि प्रधान अर्थ व्यवस्था है। जिसमें आज भी लगभग–लगभग 60 प्रतिशत के आस–पास लोग रोजगार प्राप्त करते है। इन रोजगार में शिक्षित महिलाओं का प्रतिशत लगभग–लगभग आधा है। 1950 के बाद भारत में जब महिला शिक्षा पर जोड़ दिया जाने लगा तो बहुत सारी महिलाएं पढ़ लिखकर रोजगार की तरफ आने लगी। प्रारंभ में महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर मिलने लगे। लेकिन कम साक्षरता दर तथा रोजगार के सिमित अवसर के कारण महिलाएं उस क्षेत्र में कम हीं जा सकी।

1970 तथा 1980 के दशक में महिलाएं क्लर्क, टाइपिस्ट, स्टेनों आदि की नौकरी की तरफ आकर्षित हुई, लेकिन उस समय तक नर्सिंग तथा शिक्षण ही महिलाओं की नौकरी समझा जाता था।[6] यह वह दौर था जब देश का विकास दर काफी धीमी गति से प्रगति कर रहा था इस दौर में भी अधिकांश

नैकरियाँ पुरूषों के हीं अधीन थीं। 1990 के दशक भारत की अर्थव्यवस्था के हिसाब से महत्वपूर्ण वर्ष रहा है यह वह दशक था जब भारत में आर्थिक उदारी करण का दौर प्रारंभ हुआ इस उदारी करण के साथ वैश्वीकरण का भी नया दौर भारत में प्रारंभ होने लगा। विदेश की कई कम्पनियाँ भारत में संयत्र स्थापित करने लगी जिसके कारण भारत में रोजगार के अवसर व्यापक रूप से बढ़ने लगे। दूसरी तरफ बैंकिग, बीमा तथा उद्योग जगत के अलावा सेवा क्षेत्रक में भी रोजगार के नये अवसर बनने लगें। यह वही दौर था जब महिला साक्षरता दर में (1991–2001) के दौरान सबसे बृद्वि दर्ज की गई।

1980 के दशक में हीं एस0 के0 घोष ने अपनी पुस्तक 'वूमेन इन चेंजिग सोसाइटी' में स्पष्ट तौर पर लिख दिया था कि ''अब समय आ गया है कि भारत में महिलाएं नवीन आर्थिक अवसर का लाभ उठाकर नवीन भारत के निर्माण में प्रमुख भूमिका अदा करेंगी।''[7] वास्तविक तौर पर उनका कथन 1990 तथा 2000 के दशक में चरितार्थ होने लगा। क्योंकि भारत में विदेशी निवेश बनने से तथा नई कम्पनियों की स्थापना से भारत में सेवा अधारित रोजगार के व्यापक अवसर बने जिसका फायदा निश्चित रूप से महिलाओं को हुआ। चूँकि समाज शास्त्रीये तर्क के अनुसार महिलाएं रोजगार बदलने का कार्य कम करती है अतः निजी बैंक,बीमा उद्ययन ,कॉल सेंटर आदि में महिलाओं को प्राथमिकता देकर रोजगार में रखा जाने लगा इसका प्रतिफल यह हुआ कि सदियों से आर्थिक सामनता में पिछड़ी महिलाएं रोजगार प्राप्त करने के बाद आर्थिक सशक्तिकरण की तरफ बढ़ने लगी।

अमेरिकन लेखिका गेराल्ड बोसार्थ का कहना है कि ''जिस देश में महिला जितने अधिक अनुपात में आत्मनिर्भर होंगी विशेष रूप से आर्थिक मामले में वह देश उतना ही तेज गति से आर्थिक प्रगति करते हुए महा शक्ति बनेगा।''[8] अर्थशास्त्र की यह अवधारणा 2000 के दशक में अक्षरसह सही प्रतीत होने लगी। क्यों कि इस दौर में भारत का विकास भी तेज गती से होने लगा। दूसरी तरफ हम इस तर्क पर गौर करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि महिलाओं द्वारा अर्जित आय मुख्य रूप से अतिरिक्त आय की भूमिका अदा करता है जिसका लाभ न केवल परिवार को मिलता है अपितु इससे सम्पूर्ण राष्ट्र की अर्थव्यवस्था विकास की ओर चल जाती है।

1990 के दशक में सुधा कृष्णमूर्ति (इन्फोसिस के सह प्रबंध निर्देश), नूरे (पेप्सीकों), चंदा कोचर (आइ0 सी0 आइ0 सी0 आइ0 बैंक) आदि महिलाओं अव्य व्यवस्था के क्षेत्र आगे बढ़कर पुरूषों के समान कार्य हुआ तथा नवीन भारत के आर्थिक रूप से योगदान दिया। इन तीन महिलाओं ने दूसरों के लिए भी प्रेरणा श्रोत का काम किया। आज इन्ही महिला के नक्शे कदम पर चलते हुए महिला बैंक, सिविल सेवा, तकनीकि क्षेत्र आदि की तरफ आगे बढ़ रही हैं। यह दर्शाता है कि यदि इसी रूप से महिला आगे बढ़ती रहीं तो एक दिन देश की आधी आबादी निश्चित रूप से देंश के विकास में अपनी भूमिका अदा करेंगी। यदि हम एक आंकड़े को देखे जिससे भारत सरकार के महिला एंव बाल विकास द्वारा 2010 ई0 में जारी किया गया तो हमें यह ज्ञात हो जायेगा कि किसी भी मामले में महिला राष्ट्र निर्माण में पीछे नही है।

उच्च प्रशासनिक सेवाओं में महिला की भागीदारी का प्रतिशत

सेवा भागीदारी वर्ष

सेवाएं	1987	1992	2010
भारतीय प्रशासनिक सेवा	7.5 प्रतिशत	8.93 प्रतिशत	13 प्रतिशत
भारतीय पुलिस सेवा	0.9 प्रतिशत	1.8 प्रतिशत	5.56 प्रतिशत
भारतीय विदेश सेवा	10 प्रतिशत	11.28 प्रतिशत	11.8 प्रतिशत

स्त्रोतः– विमेन इन इंडियाः ए स्टेटिकल प्रोफाइल महिला एंव बाल विकास विभाग, भारत सरकारः– 2010

यदि उपरोक्त आंकड़ो को देखा जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस भारतीय उच्च सेवा को देश निर्माण का सेवा कहा जाता है उस सेवा में महिला की भागीदारी लगातार बढ़ती जा रही है। पहले भारतीय पुलिस सेवा केवल पुरूषों का सेवा माना जाता था लेकिन किरण बेदी के प्रवेश के बाद महिलाओं का भी प्रवेश निश्चित रूप से होने लगा। आज के वर्तमान दौर में कई राज्यों अपने राज्य के भीतर प्रशासनिक सेवा में महिलाओं को 15 से 35 प्रतिशत तक का आरक्षण कर दिया है। ताकि शिक्षित महिला अधिक से अधिक प्रशासनिक सेवा में प्रवेश पा सकें। बिहार में सर्वाधिक 35 प्रतिशत महिला को आरक्षण दिया जाता है । इससे अधिक से अधिक महिला राष्ट्र के विकास में योगदान दे रही है।

राष्ट्र निर्माण में शिक्षित महिला के रूप में मेधा पाटेकर का नाम अग्रणी है। इसके नेतृत्व में नर्मदा बचाव आन्दोलन चला था। यह आन्दोलन प्रारंभ में बाध्यकारी विस्थापन के कारण प्रारंभ किया गया था जो कि बाद में पर्यावरण संरक्षण के साथ जुड़ गया। नर्मदा नदी का अपवाद तंत्र तीन राज्यों मे स्थित है जो है महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा गुजरात जहाँ पर 30 बड़े बांध बनाने का प्रस्ताव था। जिसके कारण व्यापक मात्रा मे विस्थापन प्रारंभ हुआ विशेषकर सरदार सरोवर बांध तथा महेश्वर बांध के क्षेत्र थे।9 मेधा पाटकर ने प्रारंभ में तो इस आन्दोलन को विस्थापन के विरूद्व प्रारंभ किया था लेकिन बाद में यह आन्दोलन व्यवहारिक रूप से प्रर्यावरण संरक्षण की तरफ मुड़ गया। अर्थात् इस आन्दोलन ने 1980 के दशक में राष्ट्र के पर्यावरणीय चिंतन को उभारकर सामने रखा जिससे देश में पूर्ण रूप से पर्यावरण पर बहस प्रारंभ हो गयी। जब तक यह आन्दोलन विस्थापन से जुड़ा था तब तक इसके सहभागियो की संख्या कम थी लेकिन जैसे ही यह पर्यावरण के साथ जुड़ा इसमें सहभागिता बढ़ती चली गयी।

नर्मदा बचाव आन्दोलन के बाद पर्यावरण संरक्षण से जुड़े आन्दोलन में शिक्षित महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ने लगी। कई समाज सेवी तथा अलग देश से जुड़ी महिलाओं ने उत्तराखण्ड में टिहरी आन्दोलन तथा मध्यप्रदेश में ताबा आन्दोलन प्रारंभ किया। इस प्रकार नर्मदा आन्दोलन ने लेखिका अंरूधती राय, महास्वेता देवी, चित्ररूपा पाटिल जैसे महिलाओं को इस आन्दोलन से जोड़ लिया।10 इन्होने अपने साहित्य लेखन के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में एक तरह से नर्मदा के बहाने लोगों को अपने बदलते हुए पर्यावरण के संरक्षण के लिए सचेत किया। इसके साथ–साथ उन महिलाओं को भी जगाने का काम किया जो आज तक आन्दोलन को केवल पुरूषों का हीं कार्य मानती थी।

भारत में पर्यावरण संरक्षण में चिपको आन्दोलन का नाम अग्रंणी रूप से लिया जाता हैं। यह आन्दोलन मुख्य रूप उत्तराखण्ड चमोली जिले में सुन्दरलाल बहुगुणा तथा चंडी प्रसाद भट्ट द्वारा चमोली जिले में पेड़ कटाई के विरोध में प्रारंभ किया गया था। इस आन्दोलन में पुरूषों की तुलना में महिलाओं ने भी समान भागीदारी देनी प्रारंभ कर दी। महिलाओं के इस आन्दोलन से जोड़ने का श्रेय विशेष रूप से

गौरी देवी को जाता हैं।11 उन्होने 30 महिलाओं को साथ लेकर पेड़ो की कटाई के खिलाफ चिपकों आन्दोलन को और अधिक प्रभावी तथा बेहतर बनाया। क्यों कि इन्होने समाज में घूम घूम कर महिलाओं का शिक्षित किया कि यदि पेड़ कट जायेगे तो इसका प्रभाव उनके जीवन पर किस प्रकार पड़ेगा। इससे काफी संख्या मे लोग जागरूक हुअे तथा संपूर्ण समकालीन उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र मे ही नही अपितु सम्पूर्ण भारत में पेड़ कटाई के विराध में अभियान चलने लगा। 1986 ई0 में गौड़ा देवी को उनके पर्यावरण संरक्षण में दिये योगदान के कारण 'वृक्ष मित्र' का पुरस्कार मिला।

आधुनिक काल में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान महिलाओं ने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए जमकर संघर्ष प्रारंभ कर दिया। प्रारंभ मे तो महिला आन्दोलन में तो गिनी चुनी महिलाएं ही भाग लेती थी। विशेष रूप से आन्दोलन में वे महिलाएं होती थी जो परंपरागत रूप से उदार परिवार से संबंधित होती थी। 1920 के दशक में जब गांधी जी भारतीय राजनीति के फलक पर उभरे तो उन्होनें भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं को व्यापक रूप से जोड़ना प्रारंभ कर दिया। गांधी जी के इस प्रयास का परिणाम यह निकला कि महिलाएं भी अपने राजनैतिक अधिकार के लिए जागरूक हो गयी। 1930–1932 का सविनय अवज्ञा आन्दोलन हो या 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन या इसके बीच का आन्दोलन हर आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी क्रमशः समय के साथ बढ़ती चली गयी। जब भारत स्वतंत्र हुआ और भारत का संविधान बनने लगा तो नवीन भारत को एक राष्ट्र के रूप में बनाने मे पन्द्रह महिलाओं ने विशेष रूप से योगदान दिया। ये सभी महिला उस जमाने में पुरूषो के समान शिक्षित थी तथा इनका संविधान निर्माण में व्यापक योगदान भी रहा।[12] इन शिक्षित महिलाओं का नाम इस प्रकार हैः– 1.बेगम एजाज रसूल, 2.दुगाबाई देशमुख, 3.हंसा मेहता, 4.सुचेता कृपलानी, 5.सरोजनी नायडू, 6.विजया लक्ष्मी पंडित, 7.रेणुका रें, 8. राजकुमारी अमृत कौर, 9. पूर्णिमा बनर्जी, 10.कमला चौधरी, 11.मालती चौधरी, 12.अम्मू स्वामी नाथन, 13. लीला राय, 14.एनी मास्करेन, 15.दक्षिणानी बेलायुद्व।

हम राजनीति से हट कर सामान्य रूप से साहित्य की चर्चा करें तो उसमें भी कई ऐसे महिलाओं के नाम है जिन्होने स्वतंत्रता पूर्व एंव स्वतंत्रता बाद अपने लेखन से राष्ट्र निर्माण में सहायक रहीं। इन लेखिकाओं में कई नाम सर्वोच्चता पर रखे जा सकते है। जिनमें महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, अमृता प्रीतम ,कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, पुष्पा मैत्रेय, महा स्वेता देवी प्रमुख है। ये सभी लेखिकाएं मूल रूप से महिला साहित्य लेखन की आदर्श रहीं है। इनके लेखन में महिला समस्या, समाज सुधार महिला सशक्तीकरण जैसे विषय प्रमुख रहें है। इनका लेखन मुख्य रूप से महिला सम्मान पर भी आधारित होता था। लेकिन इन सभी प्रमुख लेखिकाओं के लेखन में समाज सुधार के साथ– साथ राष्ट्रवाद के तत्व अवश्य होते थे।

छायावाद के काल में महादेवी वर्मा ने जहाँ प्रकृति तथा राष्ट्र वाद पर अपनी कलम चलायी वहीं स्वतंत्रता के बाद इनके लेखन में राष्ट्रीय तत्व उभरें। सुभद्रा कुमारी चौहान ने जहाँ वीर रस की कविताओं का लेखन कर भारतीयों में एकता तथा समरसता का भाव भरा वहीं अमृता प्रीतम ने स्वतंत्रता के समय हुए साम्प्रदायिक दंगो पर लेखन कर अपने पुस्तकों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के भाव को जगाने का कार्य किया।[13] इन तीनो लेखिकाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इन्होने भारत को जातीवाद वंशवाद आदि से ऊपर उठाने का कार्य किया। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, पुष्पा मैत्रेय एंव महास्वेता देवी ने मुख्य रूप से स्वतंत्रता के बाद उभरे सामाजिक एंव राजनैतिक समस्या पर लेखन किया इनका भी लेखन उस दौर में आया जब भारत में व्यापक अलगाव की भावना देखी जा रही थी। इनके लेखन में ऐसा

सामाजिक बगावत रहता था जो आदर्श रूपी राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक था। इन लेखिकाओं ने आने वाली पीढ़ी को प्रेरित किया कि वे आदर्श लेखन की तरफ मुड़े जिससे एक आदर्श भारत का निर्माण हो सके।[14]

अंततः कहा जा सकता है कि जब तक आधी आबादी का समुचित प्रयास नहीं होगा तब तक वास्तविक रूप से राष्ट्र निर्माण संभव नही है। इसके साथ– साथ एक शक्तिशाली तथा बेहतर राष्ट्र के निर्माण के लिए महिला का शिक्षित होना अति आवश्यक है। क्यों कि वह हीं परिवार की वह इकाई होती है जो परिवार को वास्तविक विकास की तरफ ले जाती है। जब परिवार वास्तविक विकास करेगा तभी राष्ट्र का भी निर्माण होगा। शिक्षा हमें मूल रूप से चिंतन का बेहतर आधार प्रदान करती है। शिक्षा के माध्यम से हीं उत्तम चिंतन के नजदीक हम पहुँच सकते हैं जिससे हम सही गलत का भेद कर सकते है। वहीं उत्तम शिक्षा हमें व्यवहारिक बनाती है तथा उच्च शिक्षा वैचारिक उन्ययन के अलावा शोध एंव शिक्षा के प्रसार में मदद करती है।

जहाँ तक प्रश्न है भारतीय महिला का तो स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर वर्तमान तक कई ऐसी महिलाएं हमारे देंश में हुई जिन्होनें अपने कार्यो से न केवल राष्ट्र निर्माण या विकास के पथ को प्रदर्शित किया अपितु मे आने वाली पीढ़ी के लिए भी प्रेरणा श्रोत बनी। हमारे स्वतंत्रता सेनानी महिलाओं तथा संविधान निर्माण में भाग ले रही महिलाओं ने यह साबित कर दिखाया कि महिलाएं जब राष्ट्र के कार्य से जुड़ जाती है। तो वह पुरूषों से कहीं भी पीछे नही रहती है तथा पुरूषों के समान हीं राष्ट्र निर्माण में सहयोग दे सकती है। एक शिक्षित महिला हीं स्वस्थ्य एवं शिक्षित परिवार का निर्माण कर सकती हैं जिससे एक बेहतर देश बन सकता है।

हमारी देश अभी भी विकासशील ही है इसका मुख्य कारण है कि हमारी आधी अबादी अभी भी पूर्ण शिक्षित नही है। जब यह पूर्ण शिक्षित हो जाएगी तो हमभी विकसित देशो की श्रेणी मे आजायेगें।

सन्दर्भ

1. भदान , पूनम ; उदीयमान भारत में शिक्षक , अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 2013, पृ0. 22
2. अली, बेगतारा ; इंडियाज वीमेन पावर , एस0 चाँद एण्ड को0,नई दिल्ली, 1966, पृ0. 87
3. लाल,रमण बिहारी ; भारतीय शिक्षा का इतिहास,विकास एंव समस्याएं ,राज प्रिंटर्स, मेरठ, 2006,पृ0. 83
4. जे0, वालिया ; भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास , अध्यपाल पब्लिकेशन, मेरठ,2004, पृ0.116
5. लाल ,रमण बिहारी ; पूर्वोक्त, पृ0. 172
6. देसाई,नीरा एवं ठक्कर उषा ; भारतीय समाज में महिलाएं, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,दिल्ली, 2009, पृ0. 29
7. घोष ,एस0 के0 ; वीमेन इन ए चेंजिग सोसाइटी ,आशीष पब्लिशिंग हाऊस ,नईदिल्ली, 1984, पृ0.129
8. वोसर्थ, गोराल्ड ; वीमेन रोल इन एकानौमिक डेवलपमेंट, सेंट मार्टिस प्रेस, न्यूर्याक, 1975, पृ0. 87
9. मुस्कान ; बेजमीन होती औरतें, स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली, 2014, पृ0. 95
10. वही पृ0. 96
11. वही पृ0. 94
12. शर्मा, मालती ; भारत में महिलाओं के विकास की पृष्ठ भूमि, जनता प्रकाशन , मेरठ, 2000, पृ0. 73
13. अनामिका ; स्त्री विमर्श का उत्तर गाथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ0. 155
14. वही, पृ0.163